

# संस्कृत का पुनरुद्धार ,संरक्षण और विभिन्न विषयों में इसका एकीकरण

डॉ. विभूति सी.पटेल

श्री एवं श्रीमती पी.के.कोटावाला आर्ट्स कोलेज,पाटन

doi.org/10.64643/IJIRTV12I8-191056-459

सारांश-संस्कृत भारतीय सभ्यता की मूल भाषा होने के साथ-साथ ज्ञान, विज्ञान, दर्शन और संस्कृति की समृद्ध वाहक रही है। वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, व्याकरण, नाट्यशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा दर्शन जैसे विविध विषयों में संस्कृत की केन्द्रीय भूमिका रही है। समय के साथ सामाजिक-शैक्षणिक परिवर्तनों के कारण संस्कृत का व्यवहारिक प्रयोग सीमित हुआ, किंतु आज वैश्वीकरण, भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और नई शिक्षा नीति (NEP-2020) के संदर्भ में इसका पुनरुद्धार अत्यंत आवश्यक हो गया है।

संस्कृत का संरक्षण केवल भाषा-संरक्षण नहीं, बल्कि प्राचीन वैज्ञानिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा है। आधुनिक शिक्षा, विज्ञान, मीडिया, पर्यावरण अध्ययन, सिनेमा, समाजशास्त्र और प्रौद्योगिकी के साथ संस्कृत का एकीकरण इसे समकालीन और उपयोगी बनाता है। इस प्रकार संस्कृत का पुनरुद्धार, संरक्षण और बहुविषयी एकीकरण भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक संदर्भ में पुनः प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होता है।

## की-वर्ड (Keywords)

संस्कृत, पुनरुद्धार, संरक्षण, भारतीय ज्ञान परंपरा, बहुविषयी एकीकरण, NEP-2020, IKS, शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान

## I. प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति का आधार है। इसके बिना भारतीय संस्कृति को समझना मुश्किल है। इसका साहित्य अत्यंत विशाल और समृद्ध है। जिसमें वेद,

उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराणों, नाटकों, काव्यों , विज्ञान जैसे विविध विषयों पर विशाल और समृद्ध ग्रंथ शामिल है। जो वैदिक और शास्त्रीय काल में विभाजित है और जिसका अध्ययन करना आज भी महत्वपूर्ण है। आधुनिक समय में संस्कृत का पुनर्जीवन केवल भाषा के रूप में नहीं, बल्कि विभिन्न शाखाओं में उसका समृद्ध योगदान फिर से स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।

## II. संस्कृत का पुनरुद्धार

संस्कृत भाषा केवल ग्रंथों तक सीमित न रखकर जीवंत उपयोग में हमें लाना चाहिए। तभी उनका पुनरुद्धार होगा।

विद्यालय- महाविद्यालयों में संस्कृत संभाषण पुनर्प्रवेश करवाना चाहिए। संवादात्मक संस्कृत बनाना चाहिए। सरल पाठ्यक्रम भी होना चाहिए।

सामान्य जनता तक पहुंचाने के लिए संस्कृत संभाषण शिबिर, नाट्य- प्रस्तुति, गीतिकाव्य श्लोक गान करना चाहिए।

ऑनलाइन, मोबाइल ऐप्स, यूट्यूब चैनल, इ-कोश बनाना चाहिए।

आधुनिक विषयों पर संस्कृत का लेखन होना चाहिए।

### III. संस्कृत का संरक्षण

संस्कृत का संरक्षण यानि की उनके मूल पाठकों के शुद्धता और उपलब्धता बनाए रखनी चाहिए।

विविध ताड़पत्र ,भोजपत्र पर लिखी पांडुलिपियों का डिजिटल कारण करना चाहिए।

मूल पाठकों का प्रमाणिक पाठ और टीका- टिप्पणी सहित प्रकाशन करना चाहिए ।

अकादमी विश्वविद्यालय, अभिलेखागार जैसे निजी संस्थाओं का हस्तपत्रों को बचाने का प्रयास करना चाहिए।

उच्चारण, छंद, व्याकरण की परंपरा का संरक्षण में भारतीय शुद्धता बतानी चाहिए।

### IV. संस्कृत का विभिन्न विषयों में एकीकरण

विज्ञान और प्रौद्योगिकी

कंप्यूटर भाषा के रूप में संस्कृत पाणिनी में व्याकरण की संरचना उपयुक्त मानी गई है। AI में भी पाणिनीय व्याकरण का उपयोग होता है। संस्कृत साहित्य में AI,NLP का उपयोग बढ़ रहा है। NASA और MIT जैसे संस्थानों में संस्कृत की तार्किक संरचना को सरहा है। संस्कृत में चैटबोट या रोबोट AI की सहायता से तैयार हो सकते हैं। मंत्र, श्लोक या वैदिक ज्ञान के अनुवादक में सहायक बनता है।

आयुर्वेद, योग, कृषि ,वास्तु, गणित, ज्योतिष, तर्कशास्त्र आदि में संस्कृत ग्रंथों का वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण किया जाता है। आयुर्वेद के ग्रंथों में वनस्पति,औषधियाँ और पर्यावरण संतुलन का ज्ञान निकाल सकते हैं। वेदों और उपनिषदों में वर्णित ध्वनि, प्रकाश, ऊर्जा, औषधि विज्ञान को आधुनिक रूप से जोड़ा जाता है। IKS और आधुनिक विज्ञान का सेतु संस्कृत ग्रंथोंमें उपलब्ध है।

चिकित्सा विज्ञान और आयुर्वेद

संस्कृत में चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और अष्टांग हृदय जैसे ग्रंथ हैं। जिसमें औषधिविज्ञान, शल्य चिकित्सा, नाड़ी- परीक्षा, रोग- निदान, उपचार, जीवनशैली और दीर्घकालिक स्वास्थ्य पर आधारित है। आधुनिक मेडिकल रिसर्च में आयुर्वेद के अवधारणा हमें मिलती है। आधुनिक चिकित्सा रोग- केन्द्रित है। जबकि आयुर्वेद व्यक्ति केन्द्रित है। संस्कृत का एकीकरण इन दोनों दृष्टियों को जोड़ता है। रोग लक्षणों का संस्कृत आधारित वर्णन आधुनिक निदान को गहराई देता है। आयुर्वेद से हमें दोष- दृष्टि की अवधारणा मिलती है। आधुनिक मेटाबॉलिक व हार्मोनल और असंतुलन से जोड़ी जा सकती है। आयुर्वेद में दिनचर्या, ऋतुचर्या हमें आधुनिक लोगों के तंदुरुस्ती से सामंजस्य रखती है। संस्कृत में रहे मंत्र, ध्यान से हमें आधुनिक युग में तनाव, और चिंता का उपचार मिलता है।

विज्ञान और गणित

संस्कृत साहित्य में ग्रह- गति, नक्षत्र,कालगणना, सूर्य सिद्धांत, खगोल विज्ञान, खगोल गणनाओं,गति, कार्य -कारण संबंध, भौतिक विज्ञान, धातु मिश्रण, शोधन का रसशास्त्र का ज्ञान, प्रकृति केन्द्रित दृष्टि, संतुलन और संरक्षण वनस्पति वर्गीकरण और औषधीय गुणों का जीवविज्ञान का ज्ञान प्राप्त होता है।

गणित में गणितशास्त्र में बौधायन,आपस्तम्ब,शुल्बसूत्रों, पाइथागोरस क्षेत्रफल, परिमाप, वर्ग- वृत्त, रूपांतरण दिया। दशमलव स्थानमान प्रणाली, शून्य की अवधारणा, वैश्विक गणित की क्रांति, आर्यभट्ट का त्रिकोणमिति, पाई का मान, भास्कराचार्य का बीजगणित, ब्रह्मगुप्त का ऋण-धन संख्याएँ और शून्य पर नियम मिलता है।

विज्ञान और गणित में संस्कृत का एकीकरण अतीत की उपलब्धियां को वर्तमान की तकनीक से जोड़ता है।

योग और मनोविज्ञान

सत्त्व, रजस, तमस मनोविज्ञान की आधारशिला हैं। आधुनिक युग में तनाव, अवसाद और चिंता बढ़ी रहती है इसलिए हमें पतंजलि का अष्टांग योग पढ़ना चाहिए। योगसूत्र, गीता, मंत्र, ध्यान से हमें मनोवैज्ञानिक उपचार कर सकते हैं। इस तरह संस्कृत में मनोविज्ञान आधुनिक मनोविज्ञान के साथ जोड़ा जात है। और वह हमें मानसिक स्वास्थ्य में भी उपयोगी होता है।

राजनीति, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र

संस्कृति भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल भाषा है, जिसमें राज्य- व्यवस्था, अर्थव्यवस्था और समाज- संरचना पर गहन विचार मिलता है।

वेद, उपनिषद, स्मृतियाँ, महाकाव्य, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, महाभारत, शुकनीति, मनुस्मृति, रामायण इन सभी ग्रंथों में हमें राज्य व्यवस्था मिलती है।

संस्कृत ग्रंथों में राजनीति का केन्द्र राजधर्म है। इसमें शासक का कर्तव्य, न्याय, लोककल्याण और नैतिकता हमें दिखाई देती है। महाभारत में हमें न्यायपूर्ण शासन, परामर्श और दंडनीति मिलती है। रामायण हमें आदर्श शासन, जनकल्याण, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सिखाती है। विधि, दायित्व और सामाजिक संतुलन हमें मनुस्मृति देती है।

संस्कृत में कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रशासन, गुप्तचर व्यवस्था, कूटनीति और कर-व्यवस्था, आंतरिक-बाह्य सुरक्षा, लोकहित का ज्ञान मिलता है। वैसा ही ज्ञान हमें विदुरनीति में भी प्राप्त होता है।

संस्कृत के धर्मशास्त्रों के ग्रंथ में हमें वर्णाश्रम, पुरुषार्थ, परिवार, शिक्षा, संस्कार, सामाजिक नियम और न्याय-व्यवस्था का ज्ञान प्रदान करती है। उपनिषद हमें सह-अस्तित्व, सहिष्णुता, सामाजिक उत्तरदायित्व और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सिखाती है।

संस्कृत के कई ग्रंथों, नाटकों में हमें राजनीति, सामाजिकता और अर्थव्यवस्था का संगम दिखाई देता है।

कला, संगीत एवं नाट्य

संस्कृत में कला को सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् के समन्वय के रूप में देखा गया है। भरत मुनि के नाट्य शास्त्रों में हमें कला, संगीत एवं नाट्य का त्रिवेणी संगम मिलता है। शास्त्रीय नृत्य और संगीत के आधारभूमि 'नाट्यशास्त्र' है। संस्कृत काव्यशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र में हमें ज्ञान मिलता है। संस्कृत न केवल इन कलाओं की भाषा है बल्कि उनकी दार्शनिक आत्मा भी है। संस्कृत के माध्यम से कला केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि संस्कार, संवेदना और समाज- निर्माण का साधन बनती है।

पर्यावरणीय ज्ञान

वेदों में पंचतत्त्वों, प्रकृतिपूजन, पंच महाभूतों, सृष्टि की उत्पत्ति का ज्ञान मिलता है। उपनिषदों से हमें सब में एक ही चेतना रहती है इसीलिए प्रकृति का शोषण नहीं, संरक्षण करना चाहिए। पुराणों में वृक्ष- पूजा, नदी- पूजा, पशु- संरक्षण का विधान है। मानव- स्वास्थ्य को आयुर्वेदिक पर्यावरण से जोड़ता है। संस्कृत में वनस्पतियों और जीवों का विस्तृत वर्णन और संरक्षण की बात बताई गई है।

भाषा विज्ञान एवं व्याकरण

पाणिनि का 'अष्टाध्यायी' व्याकरण के लिए एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। अन्य व्याकरणशास्त्री ने भी हमें निर्वचन और व्याकरण का ज्ञान प्रदान किया है।

संस्कृत भाषा सभी भाषा की जननी मानी जाती है इसलिए भाषाविज्ञान का ज्ञान हमें वहाँ से प्राप्त होता है। संस्कृत की ध्वनि व्यवस्था अत्यंत वैज्ञानिक है। यह व्यवस्था आधुनिक ध्वनिविज्ञान की आधारशिला मानी

जाती है। संस्कृत में प्रकृति, प्रत्यय, नाम, धातु आदि के आधार पर शब्द रचना अत्यंत सुव्यवस्थित है। यह संरचना भाषाओं की तुलना में अत्यंत उपयोगी है। संस्कृत का व्याकरण विश्व का सबसे वैज्ञानिक भाषातंत्र है, जो आधुनिक भाषाविज्ञान, अनुवादक- प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता को सशक्त आधार प्रदान कर सकता है।

#### दर्शन और धर्मशास्त्र

वेद, उपनिषद, गीता, दर्शनशास्त्र, षड्वेदांगो, सूत्रग्रंथ, स्मृतियाँ, पुराण और महाकाव्य यह प्रमाणित करते हैं कि दर्शन और धर्मशास्त्र केवल आस्था पर आधारित नहीं, बल्कि तर्क, अनुभव और नैतिक विवेक पर आधारित शास्त्र है। उपनिषद भारतीय दर्शन की आत्मा है। इनमें गहन आध्यात्मिक की अनुभूति होती है। शंकराचार्य, रामानुजाचार्य और माधवाचार्य जैसे आचार्यों ने उन्हें संस्कृत भाष्य परंपरा द्वारा दर्शन को जनसुलभ बनाया।

धर्मशास्त्र समाज- व्यवस्था, नैतिकता और आचरण का शास्त्र है। यह धर्मशास्त्र को नैतिक दर्शन से जोड़ता है। भारतीय परंपरा में दर्शन और धर्मशास्त्र परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक है। आधुनिक विश्व में मूल्य संकट, मानसिक तनाव और नैतिक असंतुलन के समाधान हेतु संस्कृत आधारित दर्शन और धर्मशास्त्र अत्यंत प्रासंगिक है।

#### ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र और समुद्रशास्त्र

ज्योतिषशास्त्र को वेदांग माना गया है। इसका उद्देश्य काल- गणना, ग्रह नक्षत्रों की गति और उनके मानव जीवन पर प्रभाव का अध्ययन है। ज्योतिषशास्त्र में वेदांग ज्योतिष, सूर्य सिद्धांत, आर्यभट्टीय, बृहत् सिद्धांत, जातक पारिजात संहिता जातक पारिजात जैसे कई ग्रंथ मिलते हैं।

वास्तुशास्त्र भवन, नगर और स्थान निर्माण का विज्ञान है, जो प्रकृति के पंच तत्वों और दिशाओं के संतुलन पर आधारित है। मानसार, मयमत, समरांगण सूत्रधार, वास्तुशास्त्र में इन सभी ग्रंथों में भूमि चयन, दिशा- विन्यास, भवन-माप, ऊर्जा संतुलन का विवरण संस्कृत में है।

समुद्रशास्त्र का संबंध मानव- शरीर की बनावट, अंगों के चिन्हों, रेखाओं और उनके माध्यम से व्यक्ति के स्वभाव, भविष्य, आयु, स्वास्थ्य और भाग्य के आकलन से है। समुद्र शास्त्र में समुद्र शास्त्र बृहत्संहिता, नारदसंहिता, अंगविद्या, हस्तलक्षण शास्त्र ग्रंथो है।

#### सिनेमा और मीडिया

सिनेमा में संस्कृत श्लोको, गीत, मंत्र, स्तोत्र का उपयोग होता है। संस्कृत कृतियों पर से कई सारी फिल्मों भी बनी है। संस्कृत में समाचार, वृत्तचित्र और शैक्षणिक कार्यक्रम भी होते हैं। कई विज्ञापनों में संस्कृत सूक्तियाँ, छोटे मंत्र, संस्कृत टैगलाइन का उपयोग होता है।

#### V. उपसंहार

संस्कृत का भविष्य इसके पुनरुद्धार, संरक्षण और विषयात्मक एकीकरण में निहित है। जब संस्कृत परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु बनेगी। तब यह भाषा न केवल विरासत रहेगी, बल्कि समकालीन ज्ञान की सशक्त माध्यम भी बनेगी। जब संस्कृत भाषा आधुनिक संदर्भ में उपयुक्त होगी, तब वह पुनः जन- भाषा और ज्ञान- भाषा बनेगी।

#### संदर्भ सूची

- [1] आचार्य, रामचन्द्र शुक्ल. भारतीय संस्कृति और संस्कृत. नागरी प्रचारिणी सभा, 2015.

- [2] अष्टे, वामन शिवराम. संस्कृत-हिंदी शब्दकोश.  
मोतीलाल बनारसीदास, 2012.
- [3] चतुर्वेदी, बट्टीनाथ. संस्कृत साहित्य का इतिहास.  
चौखम्बा विद्या भवन, 2018.
- [4] त्रिपाठी, रामशंकर. संस्कृत भाषा का विकास और  
संरक्षण. संस्कृत भारती प्रकाशन, 2016.
- [5] पाण्डेय, उमेश चन्द्र. भारतीय ज्ञान परंपरा और  
संस्कृत. लोकभारती प्रकाशन, 2020.
- [6] भारद्वाज, कृष्णकान्त. संस्कृत शिक्षा: परंपरा और  
आधुनिकता. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, 2019.
- [7] शर्मा, कपिलदेव. संस्कृत और आधुनिक विज्ञान.  
चौखम्बा सुरभारती, 2017.